Patrika Date: 09.08.2019

सरकार, यूनिवर्सिटी, कॉलेज सभी की जिम्मेदारी है भारत को फिर से विश्व गुरु का दर्जा दिलाएं

दीक्षांत समारोह में मौजूद कुलपति डॉ. उपिंदर धर, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, राज्यपाल लालजी टंडन, उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू, कुलाधिपति पुरुषोत्तम पसारी, उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी व स्वास्थ्य मंत्री तुलसी सिलावट।

श्री वैष्णव विद्यापीठ विवि में उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने किया संबोधित, 8 टॉपर को गोल्ड मैडल से नवाजा

कहा, इंदौर स्वच्छता व खानपान के साथ शिक्षा और समाजसेवा में भी नंबर वन है, इसकी अच्छाइयां पूरे देश में फैलाएं

श्री वैष्णव विद्यापीठ विवि में उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने किया संबोधित, 8 टॉपर को गोल्ड मैडल से नवाजा

कहा, इंदौर स्वच्छता व खानपान के साथ शिक्षा और समाजसेवा में भी नंबर वन है, इसकी अच्छाइयां पूरे देश में फैलाएं

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर • प्राचीन काल में नालंदा और तक्षशिला की बदौलत भारत विश्वगुरु था। हमारे यहां सुश्रुत, धन्वंतरि, भास्कराचार्य और वाराहमिहिर जैसे मूर्धन्य विद्वान हुए हैं। आचार्य सुश्रुत ने दुनिया को पहली बार सामान्य सर्जरी और प्लास्टिक सर्जरी की प्रक्रिया बताई। हमारा देश मुगलों और फिर अंग्रेजों का गुलाम हुआ और हम पिछड़ गए। आज भारत की एक भी यूनिवर्सिटी टॉप 100 में नहीं है। सरकार, यूनिवर्सिटी, कॉलेज सभी की जिम्मेदारी है कि भारत को फिर से विश्वगुरु का दर्जा दिलाएं। यह बात श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्व विद्यालय के दीक्षांत समारोह में उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने कही। यहां उन्होंने 8 टॉपर को गोल्ड मैडल से नवाजा।

उन्होंने कहा, इंदौर स्वच्छता व खानपान के साथ शिक्षा और समाजसेवा में भी नंबर वन है। यहां की अच्छाइयां पूरी दुनिया में फैलाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, कई लोग पढ़ लिखकर विदेश जाते हैं। महंगी कार और बंगले के साथ फोटो अपने घरवालों को भेजते हैं। ये ठीक वैसा ही है जैसे कोई महंगा सूट पहनकर बाथरूम के कांच में देखकर फोटो खींचता है। आप लोग भले ही बाहर जाओ, लेकिन लौटकर अपने परिवार और समाज के पास जरूर आओ।

उपराष्ट्रपति ने तीन बार इसी समारोह में आने का कार्यक्रम निरस्त करने पर माफी भी मांगी। उन्होंने कहा, शिक्षा से मनुष्य सभ्य, सुसंस्कृत और संस्कारित होता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सिर्फ ज्ञानार्जन ही नहीं, बल्कि परिवार, समाज और देश सेवा भी है। शिक्षा से मनुष्य एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ नौकरी या स्वरोजगार भी जरूरी है। यह दीक्षांत समारोह आपके लिए दीक्षा का अंत नहीं बल्कि नई शुरुआत है। शिक्षा, अस्पताल और राजनीति समाजसेवा के क्षेत्र हैं और समाजसेवा सभी धर्मों का सार है। श्री वैष्णव सहायक ट्रस्ट देश के लिए एक आदर्श समाजसेवी संस्थान है। विशेष अतिथि राज्यपाल लालजी टंडन, पूर्व लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन, उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी, स्वास्थ्य मंत्री तुलसीराम सिलावट, श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पुरुषोत्तम दास पसारी और कुलपति डॉ. उपिंदर धर ने भी संबोधित किया।

सूर्य नमस्कार से दिक्कत है तो करो चंद्र नमस्कार

उपराष्ट्रपति नायडू ने विद्यार्थियों को शुभकामना देते हुए अपेक्षा की कि वे देश और दुनिया के विकास में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा, मैं कई दीक्षांत समारोह में जा चुका हूं। खुशी होती है कि हर जगह मेरिट में लड़कियां ज्यादा होती हैं। भारत सरकार भी महिलाओं को समाज के हर क्षेत्र में समुचित प्रतिनिधित्व देना चाहती है। शिक्षा का मूल उद्देश्य समाज सेवा और कौशल विकास होना चाहिए। कौशल विकास को हमें स्वच्छ भारत मिशन की तरह एक जन आंदोलन बनाने की जरूरती है। शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ पैसा कमाना नहीं होना चाहिए।

हमारी आंखों की तरह है मातृभाषा : नायडू ने हाई स्कूल तक की पढ़ाई में मातृभाषा को अनिवार्य करने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा, मैं किसी भाषा का विरोध नहीं कर रहा, लेकिन हर एक को अपनी मातृभाषा का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि भाषा और भावना एक साथ चलती है। मातृभाषा हमारी आंख की तरह है और पराई भाषा चश्मे की तरह। उन्होंने युवाओं से अपील की कि हमेशा अपने माता-पिता और गुरु का सम्मान करें, अपने पैतृक स्थान को कभी न भूलें। पौधरोपण और पशुओं की रक्षा के क्षेत्र में काम करने की जरूरत है। देश की बढ़ती हुई आबादी को देखते हुए जल संरक्षण और जल संवर्धन जरूरी है। मनुष्य एसी के बजाय प्राकृतिक वातावरण में ज्यादा स्वस्थ रहेगा और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है।

शून्य से परमाणु तक हर खोज भारत की

राज्यपाल लालजी टंडन ने कहा, दीक्षांत समारोह प्राचीन भारत की परंपरा है। पहले ऋषि शिक्षा दिया करते थे। आज ज्ञान, विज्ञान, टेक्नोलॉजी जो भी है वह भारत की देन है। हमने दुनिया को शून्य, मेडिकल साइंस, अणु-परमाणु बताया। पहले अर्थशास्त्री चाणक्य भारत के थे। हमारी दृष्टि प्राचीन भारत की उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए भविष्य की ओर होना चाहिए। पूर्व लोकसभा स्पीकर महाजन ने शिक्षा सहित सामाजिक क्षेत्र में श्री वैष्णव सहायक ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों की तारीफ करते हुए कहा, पूरे देश को इससे सीख लेना चाहिए। डॉ. धर ने बताया, श्री वैष्णव विद्यापीठ यूनिवर्सिटी में हर वर्ग के छात्रों को मेरिट के आधार पर एडमिशन दिए जाते हैं। पिछले साल 51 लाख 51 हजार रुपए की स्कॉलरशिप दी गई थी।

गुफ्तगूं

ध्यानमग्न

मदद को उठे हाथ

उपराष्ट्रपति बोले : देश को विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना चाहते हैं

हमारी संस्कृति देती है एक साथ जीने, खाने और रहने की शिक्षा

इंदौर। नईदुनिया प्रतिनिधि

भारतीय संस्कृति हमें समाजसेवा के साथ एक साथ जीने, एक साथ खाने और एक साथ रहने की शिक्षा देती है। प्राचीन भारत में हमारे देश में नालंदा और तक्षशिला जैसी विश्वस्तर की शैक्षणिक संस्थाएं थीं जिनमें 10 हजार से ज्यादा बच्चे पढ़ते थे। तब सुश्रुत, धन्वंतरि, भास्कराचार्य और वराहमिहिर जैसे विद्वान हुए। आचार्य सुश्रुत ने दुनिया को पहली बार सामान्य और प्लास्टिक सर्जरी की प्रक्रिया बताई। अब हम उदारीकरण, निजीकरण, स्टैंडअप और स्टार्टअप के जरिये देश को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना चाहते हैं।

यह बात उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने गुरुवार को उज्जैन रोड स्थित श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में कही। उन्होंने कहा कि मैडल या डिग्री पाने वालों में 65 से 70 प्रतिशत महिलाएं होती हैं। वैष्णव ट्रस्ट बिना लाभ के सराहनीय काम कर रहा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि किसी संस्था को निस्वार्थ भाव से चलाना मामूली बात नहीं है। आजादी के पहले शिक्षा, चिकित्सा और राजनीति मिशन के लिए की जाती थी, लेकिन आज यह सब कमीशन के लिए हो रहा है। पालकों को चाहिए वे अपने बच्चों को मातृभाषा में ही शिक्षा दें। योग राजनीतिक या पीएम नरेंद्र मोदी के कारण नहीं बल्कि हमारे शरीर के लिए जरूरी है।

कई महिला-पुरुष भी नहीं जानते 370 के बारे में : उपराष्ट्रपति ने कहा कि अनुच्छेद-370 के बारे में कई बच्चे नहीं जानते। मैंने जब यह बात पत्नी को कही तो उन्होंने जवाब दिया कि केवल बच्चे ही क्यों, कई महिलाओं और पुरुषों को भी इसकी पृष्ठभूमि और अन्य पहलुओं के बारे में ढंग से नहीं पता।

विश्वगुरु बनेगा भारत : राज्यपाल लालजी टंडन ने कहा कि भारत विश्वगुरु रहा है और जल्द ही फिर विश्वगुरु बनेगा। भारत के महर्षियों ने जीरो की खोज की वरना कोई अंक गणित नहीं जान पाता। पूर्व लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन ने कहा कि व्यापारियों का काम धन कमाना होता है, मगर इंदौर के व्यापारियों ने अपनी आय का कुछ हिस्सा देकर वैष्णव ट्रस्ट बनाया जो सफलतापूर्वक काम कर रहा है। यह दुनिया के व्यापारियों के लिए अनुकरणीय कदम है।

दीक्षांत समारोह में 215 विद्यार्थियों को डिग्री दी गई। इसमें प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक भी दिए गए। उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी ने कहा कि दीक्षांत का मतलब शिक्षा का अंत नहीं होता है। जिन्हें डिग्री मिली है उनका काम आज से समाज को बेहतर करने के लिए शुरू हो गया है। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री तुलसी सिलावट ने कहा देश और राज्य में जब भी कोई बदलाव आया है उसमें युवाओं की खास भूमिका रही है।

जरूरतमंदों को ऊंचाइयों तक पहुंचाना है : संस्थान के कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी ने कहा हमारा मुख्य उद्देश्य सर्वसाधारण को सर्वसुलभ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। इसी दिशा में हमारा विश्वविद्यालय नए सोपान तय कर रहा है। वैष्णव न्यास समूह की शुरुआत 135 वर्ष पूर्व कपड़ा व्यापारियों के सहयोग से जरूरतमंदों की मदद के लिए की गई थी। विवि के कुलपति डॉ. उपेंदर धर ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इन्हें मिला गोल्ड मेडल : दिव्या पटेल बीएससी, मुस्कान नीमा बीबीए, प्रियंका विश्वकर्मा एमसीए, बेस्ट यूजी छात्र के लिए शेगली शर्मा, मनानश कौशिक बीसीए, नीलेश सिंह राजपूत को एमबीए टॉपर और बेस्ट पीजी छात्र के लिए सत्यम मिश्रा एमएससी को मेडल प्रदान किए गए।

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में छात्रा को डिग्री देते हुए उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू। ● नईदुनिया

'उम्र 25 साल से भी कम, खा रहे हैं चिकन 65'

- उपराष्ट्रपति ने कहा कि हमें विदेशी भोजन से परहेज करना चाहिए। आज जो युवाओं की उम्र 25 साल से भी कम है, वे चिकन 65 खा रहे हैं। हमें सोचना चाहिए कि कैंसर और लाइलाज बीमारियां क्यों बढ़ रही हैं? आज 12 प्रतिशत लोगों को कैंसर है। हम अच्छा भोजन नहीं खा रहे। इंदौर के लोग अच्छे हैं। यहां का खाना अच्छा है। जब भी मैं इंदौर आता हूं, कुछ अलग खाना खाता हूं।
- हम प्रकृति को नष्ट करते जा रहे हैं। जानवरों को मार रहे हैं। पेड़ काट रहे हैं। नदियों को खत्म करके पानी के साथ खेल रहे हैं। रेन वाटर का भी हम समुचित उपयोग नहीं कर रहे। हमें पानी के कजर्वेशन संवर्धन की योजना बनानी होगी। प्रकृति के साथ जीना बहुत जरूरी है। नेचर, कल्चर टुगेदर फॉर बेटर फ्यूचर, आपको यह समझना होगा।
- आप अपना काम और दी गई जवाबदारी अच्छे से निभाएंगे तो यह भी देश के हित में है। नियम-कायदों का पालन करें, सिविक सेंस, कॉमन सेंस, वन वे ट्रैफिक जैसी बातों का पालन देश के लिए करें। कहने को ये बातें छोटी हो सकती हैं लेकिन देश विकास के लिए ये प्रयास भी काफी महत्वपूर्ण है।

'अफजल के बचे काम पूरे करने जैसी बातें शर्मनाक'

उपराष्ट्रपति ने कहा कि देश के कुछ शिक्षण संस्थानों में आतंकवादी अफजल गुरु के बचे काम पूरे करने जैसी बातें शर्मनाक सोच का परिचायक है। अफजल संसद पर हमला करने वाला था। जिस दिन हमला हुआ, उस दिन मैं भी संसद में था। कुछ राज्यों में खाने को लेकर अनचाहे विवाद पैदा किए जा रहे हैं। कोई बीफ फेस्टिवल मना रहा है तो कोई एंटी बीफ फेस्टिवल। कुछ इलाकों में 'किस फेस्टिवल' आयोजित कर बेवजह के विवाद किए जा रहे हैं।

Dainik Bhaskar   Date: 09.08.2019

तक्षशिला, नालंदा जैसे गुरुकुल हमारा इतिहास, लेकिन आज हम श्रेष्ठ 100 में भी नहीं, ये शिक्षाविदों-कुलपतियों के लिए चुनौती है

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने विद्यार्थियों को संबोधित किया

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

भारत के उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या के आधार पर देखें तो चीन और अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर हम हैं। 920 विश्वविद्यालय हैं हमारे देश में और कई संस्थान विश्वस्तरीय शिक्षा दे भी रहे हैं लेकिन जब बात वर्ल्ड रैंकिंग की आती है तो टॉप 100 में एक भी यूनिवर्सिटी हमारी नहीं है। ये देश के प्रोफेसरों, शिक्षाविदों और कुलपतियों के लिए एक चुनौती है। हर संस्थान को वर्ल्ड रैंकिंग हासिल करने के लक्ष्य के साथ ही आगे बढ़ना चाहिए। एक दौर था जब भारत विश्वगुरु कहलाता था। तब तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे गुरुकुलों में 10-10 हजार छात्र पढ़ते थे। भारत ही नहीं पूरी दुनिया से छात्र इनमें पढ़ने आते थे। उस वक्त के कई नामी चीनी इतिहासकार भारत आए और हमारे गौरव के बारे में लिखा। हम पूरी दुनिया को पढ़ा रहे थे लेकिन आज कहीं नहीं हैं। ब्रिटिश राज के दौरान उन्होंने हम पर राज किया, हमें लूटा, बर्बाद किया। हमें एक बार फिर हमारे इतिहास की ओर देखना होगा। सुश्रुत, वराह मिहिर, धन्वंतरी, चाणक्य, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य जैसे सैकड़ों महागुरु थे इस देश की धरती पर जो अपने विषयों के मर्मज्ञ थे। आज वैश्विक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए हमें हमारी शिक्षा व्यवस्था को फिर तैयार करना होगा।'

देश के उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू दीक्षांत में संबोधित कर रहे थे। प्रदेश के राज्यपाल लालजी टंडन, लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, उच्चशिक्षा मंत्री जीतू पटवारी, स्वास्थ्य मंत्री तुलसीराम सिलावट सहित यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी, कुलपति डॉ. उपिंदर धर भी मौजूद थे। पुरुषोत्तमदास पसारी ने स्वागत भाषण व डॉ. धर ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। मंच पर मौजूद अन्य अतिथियों ने भी संबोधित किया। उपराष्ट्रपति ने विभिन्न कोर्स में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले स्टूडेंट्स को गोल्ड मेडल दिए।

वीडियो देखें

टॉपर्स को मेडल और सर्टिफिकेट देते उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू

उपराष्ट्रपति बनने के बाद कई संस्थानों में जा रहा हूं, हर जगह देखता हूं 70 फीसदी मेडलिस्ट लड़कियां होती हैं

उपराष्ट्रपति बनने के बाद मैं आईआईटी, एनआईटी, आईआईएम, तकनीकी संस्थान, कृषि विकास सहित कई संस्थानों और प्राइवेट यूनिवर्सिटीज में भी जाता हूं। हर जगह देख रहा हूं कि टॉपर्स में लड़कियों की संख्या बढ़ती जा रही है। 65 से 70 फीसदी मेडलिस्ट लड़कियां होती हैं। यहां भी टॉप पोजीशंस पर लड़कियों की संख्या ज्यादा है। ये तो सफलता है ही, लेकिन इसे और प्रोत्साहित करना है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ सिर्फ सरकारी अभियान न हो बल्कि जन आंदोलन बने। बेटियां सुरक्षित रहेंगी तभी देश का भविष्य सुरक्षित होगा। आजादी के पहले शिक्षा देना एक मिशन हुआ करता था। लोग निःस्वार्थ भाव से शिक्षा देते थे। आजादी के कुछ दशक बाद इस मिशन में रिविजन हुआ। कुछ ओमिशन हुए और ये कमीशन में बदल गया। आज कई संस्थाएं इसे व्यापार के रूप में चला रही हैं। वैष्णव ग्रुप पिछले 135 सालों से शिक्षा के लिए निःस्वार्थ रूप से काम कर रहा है। ये आसान काम नहीं है। आप लोग इन प्रयासों के जरिए समाज को वापस कुछ लौटा रहे हैं।

1966 में बतौर छात्र आया था यहां, वंदे मातरम् जो यहां सुना, वो अब भी यादों में

एयरपोर्ट पर जब मैंने श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय और इस ट्रस्ट का पूरा नाम पढ़ा तो मुझे याद आया कि वर्ष 1966 में विद्यार्थी परिषद का एक कार्यक्रम इस ट्रस्ट के संस्थान में हुआ था। उसमें बतौर छात्र शामिल होने के लिए मैं इंदौर आया था। उस कार्यक्रम में एक महिला ने हमारा राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' गाया था और उनका गायन इतना सुमधुर था कि वो आवाज, वो प्रस्तुति आज भी मेरे जहन में है। वंदे मातरम् की उससे श्रेष्ठ प्रस्तुति मैंने आज तक नहीं सुनी। इंदौर अपने आप में एक अलग जगह है। खासतौर पर यहां का खाना। जब भी यहां आता हूं एक खास तरह की मिठाई हमेशा खाता हूं। इस शहर की जमीन, यहां की संस्कृति, खानपान, लोकसंस्कृति और स्वच्छता सब बेहतर है। इंदौर शुड गो अहेड।

नेचर, कल्चर बेटर फॉर फ्यूचर, हमें प्रकृति की ओर लौटना होगा

नायडू बोले फिटनेस बहुत जरूरी है। कोई फिजिकल एक्टिविटी अनिवार्य रूप से करें। मैं 70 साल का हूं। आज भी रोज सुबह एक घंटा बैडमिंटन खेलता हूं। आधा घंटा वॉक और आधा घंटा योग करता हूं। विदेशों में देखता हूं कि वहां योग को कितनी सिंसियरली प्रैक्टिस कर रहे हैं लोग। वहां एक बच्चे ने मुझसे पूछा सर योग करने से क्या होगा। मैंने कहा योग करने से आप योग्य होंगे। वेस्टर्न लाइफस्टाइल अपना चुके हमारे बच्चे आलसी हो रहे हैं। हमें अपने बेसिक्स की ओर लौटना होगा। प्रकृति की ओर लौटना होगा। हम कुदरत की नेमतें बर्बाद कर रहे हैं।

युवाओं को हिदायत

इंस्टेंट फूड कॉन्सटेंट डिसीज़ देगा, स्टूडेंट्स सेहत का भी ख़याल रखें

- हम लिबरलाइजेशन, प्राइवेटाइजेशन और ग्लोबलाइजेशन के दौर में रह रहे हैं। हम आइसोलेशन में रहकर कॉन्सोलिडेशन हासिल नहीं कर सकते।
- दूसरों का ध्यान रखना और ज्ञान साझा करना भारत का फलसफा
- हमारे पास नॉलेज है उसे पहचानना होगा
- फिजिकल फिटनेस से आप मेंटली अलर्ट बनेंगे
- प्रकृति के साथ रहना सीखना होगा
- इंस्टेंट फूड कॉन्स्टेंट डिसीज देता है
- पढ़कर भले विदेश जाएं लेकिन लौटकर अपने समाज अपने देश को कुछ जरूर दें
- मेहनत, सफलता को निश्चित बनाती है
- मां, जन्मस्थान, मातृभाषा, अपना देश और गुरु...इन्हें कभी न भूलें
- सबसे पहले देश फिर समाज और अंत में खुद को प्राथमिकता दें

इन्हें मिले गोल्ड मेडल

दिव्या पटेल, मुस्कान जैन, मनीषा कौशिक, प्रियंका विश्वकर्मा, निलेश सिंह राजपूत और सत्यम मिश्रा को अकादमिक प्रदर्शन के आधार पर गोल्ड मेडल दिए गए। शेफाली शर्मा और निलेश सिंह राजपूत को क्रमशः यूजी और पीजी के बेस्ट स्टूडेंट का गोल्ड मेडल दिया गया।

श्री वैष्णव विद्यापीठ के दीक्षांत समारोह में
उपराष्ट्रपति वैंकया नायडु ने कहा,

कास्ट, कम्युनिटी, कैश व क्रिमिनलिटी नहीं कैरेक्टर, कैलिबर, कैपिसिटी, कंडक्ट से चुनें नेता

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है। राजनीतिक विचारधारा में परिवर्तन जरूरी है। जनप्रतिनिधि व सरकार का चुनाव 4-सी यानी कैरेक्टर (चरित्र), कैलिबर (बुद्धि का विस्तार), कैपेसिटी (क्षमता) और कंडक्ट (आचरण) के आधार पर होता था। अब कुछ लोगों ने इसे उल्टा कर दिया है। राजनीति के नए चार सी कॉस्ट (जाति), कम्युनिटी (समाज), कैश (पैसा) और क्रिमिनलिटी (अपराधिक) हो गए। ये देश के लिए ठीक नहीं है।

उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने गुरुवार को श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में यह बात कही। उन्होंने कहा, विकास के लिए राष्ट्रीय एकता मजबूत करने की जरूरत है। जो भारत में पैदा हुआ वह भारतीय है। कुछ जगह जाति, लिंग, धर्म, समाज के नाम पर अभी भी भेदभाव हो रहा है। निरक्षरता और गरीबी देश के लिए बड़ी चुनौती है। करीब 20 फीसदी जनसंख्या अनपढ़ है। संत कबीर और संत तुकाराम जैसे लोगों ने जाति और धर्म के भेदभाव का विरोध किया था। व्यक्ति से बड़ा परिवार, परिवार से बड़ा समाज और समाज से बड़ा देश होता है।

विचारधारा में बदलाव की जरूरत, यहां रहने वाला हर धर्म का व्यक्ति भारतीय

इन सब पर ध्यान देने की जरूरत

राष्ट्रीय एकता मजबूत करने के लिए जातिवाद, संप्रदायवाद, धन लोलुपता और अपराध को समाप्त करना होगा। नायडू ने कुछ यूनिवर्सिटी में हो रही गतिविधियों पर चिंता जताते हुए कहा, कहीं अफजल गुरु के समर्थन में नारे लगाए जाते हैं। बीफ तो कभी किस फेस्टिवल को मुद्दा बना लेते हैं।

Dainik Bhaskar Date: 09.08.2019

उपराष्ट्रपति बोले- कुछ यूनिवर्सिटी में अफजल गुरु नारे लग रहे, यह शर्मनाक

भास्कर संवाददाता | इंदौर. उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने कहा है कि देश में

920 से ज्यादा यूनिवर्सिटी है, लेकिन एक भी वर्ल्ड टॉप 100 यूनिवर्सिटी में नहीं हैं। यह शिक्षाविदों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। कुछ यूनिवर्सिटी में नारे लग रहे कि अफजल गुरु ने जो काम अधूरा छोड़ा, उसे पूरा करेंगे। ऐसे लोगों को शर्म आना चाहिए। वे वैष्णव विद्यापीठ के दीक्षांत समारोह में बोल रहे थे। -पढ़ें सिटी भास्कर